बाब 8: माहे शाबान की फ़ज़ीलत के बयान में

फ़स्ल: 1 : इस बाब में हम माहे शाबान की फ़ज़ीलत, उसकी रूहानी क़ीमत, उसकी नेमतों की कमालात और उसके फ़ैज़ के मआख़िज़ का ज़िक्र करते हैं। इसमें कई फ़स्लें हैं।

इस फ़स्ल में हम माहे शाबान की फ़ज़ीलत को अक़्ल और नक़्ल दोनों के ज़रिए बयान करते हैं। जान लो कि **माहे शाबान बहुत अज़ीम-उश-शान महीना है**। इसी महीने में वह मुबारक रात है जिसमें अल्लाह तआला ने अपनी जलाल और शान के साथ उस नवजात के ज़रिए मदद फ़रमाई, जिसकी रोशनी-ए-इस्लाम और ईमान को अहले-ज़ुल्म बुझाने के क़रीब पहुँच गए थे। उसकी जगह और अहमियत की तफ़्सील आगे अपने मुक़ाम पर आएगी।

यह महीना, जैसा कि हम पहले बयान कर चुके हैं, रुहानी मंज़िलों में से एक मंज़िल और सफ़र के मराहिल में से एक मरहला है। अहले-तौफ़ीक़ इस महीने के फ़वाइद हासिल करते हैं, उसकी नेमतों की मेज़ पर बैठते हैं और उसके फ़ैज़ के चश्मों से सैराब होते हैं।

इसके शरफ़ के लिए इतना ही काफ़ी है कि **रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे अपनी ज़ात-ए-मुबारक के लिए चुना**, और अपने पाक कलाम में साफ़ तौर पर इसका एलान फ़रमाया। और जो लोग इस महीने के रोज़ों में आपकी मदद करते हैं, उनके लिए आपने मुक़द्दस दुआ फ़रमाई। आप ﷺ ने फ़रमाया: **“शाबान मेरा महीना है, अल्लाह उस पर रहमत फ़रमाए जो मेरे महीने में मेरी मदद करे।”**

जो शख़्स इस क़ुबूल शुदा दुआ और जुड़ी हुई रहमत के साए में आना चाहता है, वह रसूलुल्लाह ﷺ की इस महीने में मदद करे और उन लोगों में शामिल हो जाए जिनका ज़िक्र हज़रत मुहम्मद ﷺ की अज़ीम ज़बान से हुआ है।
जब तुम इसकी पहली रात में दाख़िल होते हो, तो तुम माहे रजब से अलग हो जाते हो, उस पवित्र हद से निकल आते हो, और अब तुम्हारा इरादा होता है कि **माहे रमज़ान से इस हाल में मुलाक़ात करो कि तुम पूरी तरह तैयार हो**, ज़ाहिर और बातिन दोनों में अपने आज़ा की पाकीज़गी के साथ। इस तैयारी की हालत में वैसे ही रहो जैसा इस मक़ाम के लायक़ है— अमल की इस्लाह, बात की दुरुस्ती, और अपने नफ़्स को बुरे आमाल के ख़तरों से महफ़ूज़ रखो।

फ़स्ल: 2: माहे शाबान की इज़्ज़त व तकरीम के बारे में, जब नबी ﷺ ने उसका चाँद देखा

सफ़वान बिन मिहरान अल-जम्माल से रिवायत की गई है। वह कहते हैं: "अबू अब्दुल्लाह (अ.) ने मुझसे फ़रमाया कि मैं अपने साथियों को माहे शाबान में रोज़ा रखने की तरग़ीब दूँ।"

मैंने अर्ज़ किया: "आप पर क़ुर्बान जाऊँ! क्या आप इस महीने में रोज़ा रखने के लिए कोई ख़ास फ़ज़ीलत मानते हैं?"

आप (अ.) ने फ़रमाया: "हाँ। जब रसूल-ए-ख़ुदा ﷺ ने माहे शाबान का चाँद देखा, तो आपने मदीना में मुनादी करने वाले को हुक्म दिया कि वह लोगों के सामने यह एलान करे: 'ऐ यसरिब के लोगो! मैं अल्लाह का रसूल हूँ, जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है। आगाह हो जाओ कि शाबान मेरा महीना है। पस अल्लाह की रहमत हो उस पर जो मेरे महीने में मेरी मदद करे।'"

इसके बाद इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) ने इज़ाफ़ा किया: "अमीर-उल-मोमिनीन अली (अ.) ने फ़रमाया: 'जब से मैंने रसूल-ए-ख़ुदा ﷺ के मुनादी करने वाले की आवाज़ माहे शाबान के बारे में सुनी है, अगर अल्लाह ने चाहा तो मैं अपनी ज़िंदगी में कभी माहे शाबान के रोज़े छोड़ूँगा नहीं।'"फिर इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) ने फ़रमाया:"दो लगातार महीनों के रोज़े अल्लाह की बारगाह में क़ुबूल की गई तौबा माने जाते हैं।"

अल-मुहिम्मात वत-ततिम्मात नामक किताब की श्रृंखला के पाँचवें भाग में हमने हर महीने की पहली रात के आमाल बयान किए हैं।और महीनों के आमाल से संबंधित किताब में हमने हर महीने का चाँद देखने के वक़्त पढ़ी जाने वाली दुआएँ भी बयान की हैं।इसलिए **माहे शाबान का चाँद देखने के समय भी उन्हीं आमाल पर अमल करना चाहिए**। और अगर किसी के पास वह किताब न हो, तो — इंशाअल्लाह — उसे नीचे दी गई दुआ पढ़नी चाहिए: *

*"ऐ मेरे ख़ुदा! यह माहे शाबान का चाँद है। तू इसकी भलाई को हमसे बेहतर जानता है। ऐ मेरे ख़ुदा! इसे हमारे लिए सआदत, अमन, मग़फ़िरत और ख़ुशी का ज़रिया बना दे, और इसके ज़रिए ख़तरों को दूर फ़रमा दे।

इसे नाफ़रमानी करने वालों और इल्ज़ाम लगाने वालों से बचाव का वसीला बना दे। हमें इसके आमाल अदा करने की तौफ़ीक़ देकर इज़्ज़त अता फ़रमा, और इसके दौरान हमें अपनी रहमत और इनायत की चादर में ढाँप ले।

इस महीने में हमें ऐसा पाक कर दे कि हम माहे रमज़ान में दाख़िल हों और तेरी रहमत से वह बेहतरीन दर्जा हासिल करें जो मुसलमानों और मोमिनों में से किसी ने भी हासिल किया हो। ऐ सबसे ज़्यादा मेहरबान, ऐ सबसे ज़्यादा रहम करने वाले!"**

और किसी भी महीने का चाँद देखने की दुआ **छठे भाग में माहे रमज़ान की दुआओं के तहत** बयान की गई है, जो चाँद देखने के बारे में है। इसलिए **माहे शाबान का चाँद देखते वक़्त भी उसी दुआ को पढ़ा जा सकता है**।

फ़स्ल 3: माहे शाबान की पहली रात की नमाज़ें

रसूल-ए-ख़ुदा ﷺ से रिवायत की गई है कि आपने फ़रमाया: **"जो शख़्स माहे शाबान की पहली रात में सौ (100) रकअत नमाज़ अदा करे**, और हर रकअत में **सूरह अल-फ़ातिहा** एक बार और **'क़ुल हुवल्लाहु अहद'** एक बार पढ़े, फिर नमाज़ से फ़ारिग़ होकर **पचास (50) बार सूरह अल-फ़ातिहा** पढ़े— तो मैं उस ज़ात की क़सम खाता हूँ जिसने मुझे हक़ के साथ नुबूव्वत के लिए मबऊस फ़रमाया, कि जो शख़्स यह नमाज़ अदा करे और बंदगी के साथ रोज़ा भी रखे, **अल्लाह तआला उसे आसमानों और ज़मीन के रहने वालों की बुराइयों से, शरारती ताक़तों से और बादशाहों के ज़ुल्म से महफ़ूज़ रखेगा।** अल्लाह उसके **सत्तर हज़ार (70,000) बड़े गुनाह माफ़ फ़रमा देगा**, और उससे **क़ब्र का अज़ाब दूर कर देगा। मुनकर और नकीर** उसे डराएँगे नहीं। वह क़ब्र से इस हाल में निकाला जाएगा कि **उसका चेहरा चौदहवीं के चाँद की तरह चमक रहा होगा।** वह **पुल-ए-सिरात** से बिजली की तरह गुज़र जाएगा, और **उसका आमालनामा उसके दाएँ हाथ में दिया जाएगा।"**

नोट्स:

1. **'क़ुल हुवल्लाहु अहद'** — क़ुरआन मजीद, सूरह अल-इख़लास (112:1)
2. **मुनकर और नकीर** — वे दो फ़रिश्ते जो क़ब्र में मय्यत से सवाल करते हैं

माहे शाबान की पहली रात की एक और नमाज़

रसूल-ए-ख़ुदा ﷺ से रिवायत की गई है कि आपने फ़रमाया:**"जो शख़्स माहे शाबान की पहली रात में बारह (12) रकअत नमाज़ अदा करे**, और हर रकअत में **सूरह अल-फ़ातिहा** और **'क़ुल हुवल्लाहु अहद'** पंद्रह (15) बार पढ़े—तो अल्लाह तआला उसे **दस हज़ार (10,000) शहीदों का सवाब** अता फ़रमाएगा, उसके लिए **बारह (12) साल की इबादत का अज्र लिखेगा**, और उसके **गुनाह इस तरह मिटा देगा जैसे वह आज ही पैदा हुआ हो।** और अल्लाह तआला **क़ुरआन की हर आयत के बदले जन्नत में एक महल** अता फ़रमाएगा।"

माहे शाबान की पहली रात की एक और नमाज़

रसूल-ए-ख़ुदा ﷺ से यह भी रिवायत है कि आपने फ़रमाया:**"जो शख़्स माहे शाबान की पहली रात में दो (2) रकअत नमाज़ अदा करे**, और हर रकअत में **सूरह अल-फ़ातिहा** एक बार और **'क़ुल हुवल्लाहु अहद'** तीन (3) बार पढ़े, और फिर यह कहे: **'ऐ मेरे ख़ुदा! यह क़यामत के दिन तक तेरे साथ मेरा अहद है।'** तो अल्लाह तआला उसे **शैतान और उसके लश्कर से महफ़ूज़ रखेगा**, और उसे **सच्चों (सिद्दीक़ीन) का सवाब अता फ़रमाएगा।"**

****माहे शाबान की पहली, दूसरी और तीसरी रात की नमाज़ और दिन में रोज़े के साथ****

रसूल-ए-ख़ुदा ﷺ से रिवायत की गई है कि आपने फ़रमाया: **"जो शख़्स माहे शाबान के पहले तीन (3) दिन रोज़ा रखे**, और रातों में जागकर **दो (2) रकअत नमाज़ अदा करे**, और हर रकअत में **सूरह अल-फ़ातिहा** एक बार और **'क़ुल हुवल्लाहु अहद'** ग्यारह (11) बार पढ़े—तो अल्लाह तआला उसे **आसमानों और ज़मीन के रहने वालों की बुराइयों से, शैतान और उसके लश्कर की शरारतों से**, और **हर ज़ालिम बादशाह के ज़ुल्म से महफ़ूज़ रखेगा**। मैं उस ज़ात की क़सम खाता हूँ जिसने मुझे हक़ के साथ नुबूव्वत अता फ़रमाई, कि अल्लाह तआला उसके और अल्लाह अज़्ज़ो-जल्ल के दरमियान के **सत्तर हज़ार (70,000) बड़े गुनाह माफ़ फ़रमा देगा**, और उससे **क़ब्र का अज़ाब, रूह के जिस्म से निकलने की सख़्ती**, और **उसकी तमाम मुश्किलें दूर कर देगा**।"

हवाले: 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' — क़ुरआन मजीद, सूरह अल-इख़लास (112:1)

फ़स्ल 4: पूरे माहे शाबान के रोज़ों से संबंधित रिवायतें

अबू जाफ़र इब्न बाबूयह ने अपनी किताब **सवाब-उल-आमाल** में सनद के साथ रिवायत की है कि रसूल-ए-ख़ुदा ﷺ से पूछा गया: **"रोज़ा रखने का सबसे अफ़ज़ल वक़्त कौन-सा है?"** आप ﷺ ने फ़रमाया: **"माहे रमज़ान की ताज़ीम के लिए माहे शाबान में रोज़ा रखना।"** इसी किताब **सवाब-उल-आमाल** में उम्मे सलमा (रज़ि.) — अल्लाह उनसे राज़ी हो — से एक और रिवायत बयान की गई है: **"रसूल-ए-ख़ुदा ﷺ ने किसी पूरे महीने में रोज़ा नहीं रखा सिवाय पूरे माहे शाबान के, और फिर उसे माहे रमज़ान से मिला दिया।"**

अबू जाफ़र मुहम्मद इब्न बाबूयह ने अपनी किताब **मन ला यहज़ुरुहुल फ़क़ीह** में अबू जाफ़र (अ.) से रिवायत की है: **"पूरे माहे शाबान के रोज़े तमाम لغزش०ो०ं, 'वस्मे' और 'बदरे' से पाक कर देते हैं।"**

अबू हमज़ा ने पूछा: **"वस्मे से क्या मुराद है?"** इमाम (अ.) ने फ़रमाया: **"गुनाह करने के लिए क़सम खाना और शर्त लगाना।"**

अबू हमज़ा ने फिर पूछा: **"बदरे से क्या मुराद है?"** इमाम (अ.) ने फ़रमाया: **"गुस्से की हालत में क़सम खाना, और बाद में उस पर पछतावा होना।"**

अबू जाफ़र इब्न बाबूयह ने अपनी एक किताब में अबू जाफ़र (अ.) से यह भी रिवायत की है: **"रसूल-ए-ख़ुदा ﷺ माहे शाबान और माहे रमज़ान दोनों में रोज़ा रखते थे। आपने इन दोनों महीनों के रोज़ों को आपस में**

जोड़ दिया, लेकिन लोगों को ऐसा करने से मना फ़रमाया। ये दोनों अल्लाह के महीने हैं और तुम्हारे गुज़रे हुए और आने वाले गुनाहों का कफ़्फ़ारा हैं।"

यह जो कहा गया कि **"ये अल्लाह के महीने हैं"**, तो रिवायतों से मालूम होता है कि **माहे शाबान रसूल ﷺ का महीना है**, और जो चीज़ रसूल ﷺ की है, वह अल्लाह ही की है।

और यह जो फ़रमाया गया कि **"आप ﷺ ने दोनों महीनों के रोज़े जोड़े, लेकिन लोगों को मना किया"**, इसका मतलब यह है कि लोगों को बिना किसी फ़ासले के लगातार दो महीने रोज़ा रखने से रोका गया। इससे मुराद यह है कि **शाबान और रमज़ान के दरमियान एक या दो दिन का फ़ासला रखा जाए।**
इस बात की ताईद आगे आने वाली रिवायत से होती है।

अल-मुफ़ज़्ज़ल इब्न उमर ने इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) से रिवायत की है:**"मेरे वालिद शाबान और रमज़ान के दरमियान एक दिन का फ़ासला रखते थे।"**

और अल-हलबी ने इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) से रिवायत की है:**"माहे शाबान में रोज़ा रखना अच्छा है, लेकिन शाबान और रमज़ान के बीच एक या दो दिन का फ़ासला रखना ज़्यादा बेहतर है।"**

अगर तुम **पूरे माहे शाबान के रोज़ों से मिलने वाली पूरी कामयाबी** हासिल करना चाहते हो,तो कोशिश करो कि **ज़िंदगी में एक बार ज़रूर ऐसा कर लो**।और अगर कोई रुकावट हो — जैसा कि हमने बयान किया —तो **जितना मुमकिन हो सके, उतने रोज़े रखो**।

फ़स्ल 5: माहे शाबान की फ़ज़ीलत और उसके पहले दिन के रोज़े की फ़ज़ीलत

अबू जाफ़र इब्न बाबूयह — अल्लाह उन पर रहमत फ़रमाए — ने अपनी किताबों **सवाब-उल-आमाल** और **अल-अमाली** में सनद के साथ रसूल-ए-ख़ुदा ﷺ से रिवायत की है:

एक बार नबी ﷺ के सहाबी माहे शाबान की फ़ज़ीलतों का ज़िक्र कर रहे थे, तो रसूल-ए-ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया:**"यह बड़ा शरीफ़ महीना है। यह मेरा महीना है। अर्श को उठाने वाले फ़रिश्ते इसकी ताज़ीम करते हैं और इसकी शराफ़त को पहचानते हैं। यह वह महीना है जिसमें मोमिनों के लिए माहे रमज़ान के रोज़ों का रिज़्क़ बढ़ाया जाता है। यह आमाल का महीना है, जिसमें अल्लाह नेक आमाल का सत्तर गुना सवाब देता है, बुरे आमाल मिटा देता है, गुनाह बख़्श देता है और नेक आमाल को क़ुबूल करता है। अल्लाह-ए-क़ह्हार अपने**

बंदों के सामने इस महीने पर फ़ख़्र करता है और उनके रोज़ों और रातों की इबादत को देखकर अर्श उठाने वाले फ़रिश्तों के सामने उन पर गर्व करता है।"

इसके बाद अली इब्न अबी तालिब (अ.) खड़े हुए और अर्ज़ किया:**"या रसूलल्लाह! मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान हों! इस महीने में रोज़ा रखने का सवाब बयान फ़रमाइए, ताकि हमारे अंदर रोज़ा रखने का शौक़ बढ़े और हम अल्लाह-ए-अज़्ज़ो-जल्ल की ज़्यादा इबादत करें।"**
तो रसूल-ए-ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया:**"जो शख़्स माहे शाबान के पहले दिन रोज़ा रखे, अल्लाह-ए-अज़्ज़ो-जल्ल उसके लिए सत्तर नेकियों का सवाब लिखता है, जो पूरे एक साल की इबादत के बराबर है।"**

फ़स्ल 6: माहे शाबान के किसी भी दिन के रोज़े की फ़ज़ीलत

इब्न बाबूयह ने अपनी किताबों **सवाब-उल-आमाल** और **अल-अमाली** में अब्दुल्लाह इब्न अल-फ़ज़्ल अल-हाशिमी से, और उन्होंने इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) से रिवायत की है:

"माहे शाबान के रोज़े क़यामत के दिन के लिए जमा कर दिए जाते हैं। जो शख़्स शाबान में ज़्यादा रोज़े रखता है, अल्लाह यक़ीनन उसके हालात बेहतर कर देता है और उसे दुश्मनों से बेनियाज़ कर देता है। और जो शख़्स शाबान में एक दिन का रोज़ा रखे, अल्लाह उसके लिए जन्नत को यक़ीनी बना देता है।"

फ़स्ल 7: एक, दो या तीन दिन के रोज़े की फ़ज़ीलत

इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) ने अपने वालिद से, उन्होंने अपने दादा से, और उन्होंने रसूल-ए-ख़ुदा ﷺ से रिवायत की है: **"शाबान मेरा महीना है और रमज़ान अल्लाह-ए-अज़्ज़ो-जल्ल का महीना है। जो शख़्स मेरे महीने में एक दिन रोज़ा रखेगा, मैं उसकी शफ़ाअत करूँगा। जो मेरे महीने में दो दिन रोज़ा रखेगा, अल्लाह उसके तमाम पिछले गुनाह माफ़ कर देगा। और जो तीन दिन रोज़ा रखेगा, उससे कहा जाएगा कि अपने आमाल नए सिरे से शुरू करो।"**

अबू जाफ़र मुहम्मद इब्न बाबूयह ने अपनी किताब **मन ला यहज़ुरुहुल फ़क़ीह** में रिवायत की है कि इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) ने फ़रमाया:**"जो शख़्स माहे शाबान के पहले दिन रोज़ा रखे, उसके लिए जन्नत यक़ीनी है। जो दो दिन रोज़ा रखे, अल्लाह दुनिया और आख़िरत में हर रोज़ उस पर रहमत की नज़र फ़रमाता है। और जो तीन दिन रोज़ा रखे, वह जन्नत में हर रोज़ अर्श के क़रीब अल्लाह की ज़ियारत करेगा।"**
यहाँ "अर्श पर ज़ियारत" से मुराद यह है कि वह अल्लाह के मुक़र्रब बंदों में शामिल होगा, जैसे काबा अल्लाह का घर है और उसका दीदार करना गोया अल्लाह की ज़ियारत है।

शैख़ इब्न बाबूयह — अल्लाह उन पर रहमत फ़रमाए — ने लिखा है कि यह रिवायत जन्नत में अंबिया (अ.) की ज़ियारत की तरफ़ इशारा करती है। इसी तरह मोमिन की ज़ियारत करना, उसे खाना खिलाना और कपड़े पहनाना अल्लाह की ज़ियारत के मानिंद है।

फ़स्ल 8: माहे शाबान में सदक़ा देने और इस्तिग़फ़ार की फ़ज़ीलत

सईद इब्न अब्दुल्लाह ने दाऊद इब्न कसीर अल-रुक़्क़ी से रिवायत की है: मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) से माहे रजब के रोज़ों के बारे में पूछा। आप (अ.) ने फ़रमाया: **“तुम माहे शाबान के रोज़ों के बारे में क्यों नहीं पूछते?”**
मैंने अर्ज़ किया:**“या इब्न रसूलिल्लाह! शाबान में एक दिन रोज़ा रखने का क्या सवाब है?”**
आप (अ.) ने फ़रमाया:**“अल्लाह की क़सम, उसका सवाब जन्नत है!”**
फिर मैंने पूछा:**“इस महीने में सबसे बेहतरीन अमल कौन-सा है?”**

आप (अ.) ने फ़रमाया:**“सदक़ा देना और इस्तिग़फ़ार करना। जो शख़्स माहे शाबान में सदक़ा देता है, अल्लाह उसे इस तरह बढ़ाता है जैसे तुम छोटे ऊँट को पालते हो। फिर क़यामत के दिन अल्लाह उसे कोह-ए-उहद जितना बड़ा करके अता फ़रमाएगा।”**

शैख़ अबू जाफ़र इब्न बाबूयह ने अपनी किताब **अल-अमाली** में रिवायत की है कि इमाम अली इब्न मूसा रज़ा (अ.) ने फ़रमाया: **“जो शख़्स माहे शाबान में सत्तर (70) बार अल्लाह से मग़फ़िरत माँगे, अल्लाह उसके गुनाह माफ़ कर देता है, चाहे वे आसमान के तारों जितने ही क्यों न हों।”**

फ़स्ल 9: माहे शाबान में अल्लाह की ताज़ीम और इस्तिग़फ़ार की फ़ज़ीलत

इबादात की किताबों में रसूल-ए-ख़ुदा ﷺ से रिवायत है:

“जो शख़्स माहे शाबान में एक हज़ार (1000) बार यह कहे: ‘अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। हम उसी की इबादत करते हैं, पूरे इख़लास के साथ, चाहे मुशरिकों को यह नापसंद हो,’ तो अल्लाह उसके लिए हज़ार साल की इबादत का सवाब लिखता है और हज़ार साल के गुनाह मिटा देता है।क़यामत के दिन वह क़ब्र से इस हाल में निकाला जाएगा कि उसका चेहरा चौदहवीं के चाँद की तरह चमक रहा होगा, और उसे सच्चों (सिद्दीक़ीन) में लिखा जाएगा।”

माहे शाबान के हर दिन की ख़ास इस्तिग़फ़ार

मुहम्मद इब्न अल-हसन अस-सफ़्फ़ार ने **फ़ज़्ल-उद-दुआ** में रिवायत किया है कि इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) ने फ़रमाया:

"जो शख़्स माहे शाबान के हर दिन सत्तर (70) बार यह दुआ पढ़े: 'मैं अल्लाह से मग़फ़िरत माँगता हूँ। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह ज़िंदा है, क़ायम है, बहुत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है, और मैं उसी की तरफ़ रुजू करता हूँ।' तो यह 'वाज़ेह उफ़ुक़' में लिखा जाएगा।"

जब पूछा गया कि **'वाज़ेह उफ़ुक़'** से क्या मुराद है, तो जवाब दिया गया: **"यह अर्श के सामने एक मैदान है, जहाँ नहरें बहती हैं और सितारों की तादाद के बराबर प्याले मौजूद हैं।"**

एक और रिवायत में आया है कि यह सब **आसमान के सितारों की तादाद के बराबर** लिखा जाएगा।

फ़स्ल 10: माहे शाबान की दुआएँ

यह दुआएँ **अमीर-उल-मोमिनीन अली (अ.)** और अहले-बैत (अ.) से मर्वी हैं, जो वे माहे शाबान में पढ़ा करते थे:

**"ऐ मेरे रब! मुहम्मद और उनकी आल (अ.) पर दरूद भेज। जब मैं तुझे पुकारूँ तो मेरी दुआ सुन, मेरी आवाज़ सुन और मेरी तरफ़ मुतवज्जेह हो। मैं तेरी बारगाह में दौड़ता हुआ आया हूँ, तेरे सामने खड़ा हूँ, आज़िज़ी के साथ गिड़गिड़ा रहा हूँ, रो रहा हूँ और उस अज्र का उम्मेदवार हूँ जो तूने मेरे लिए रखा है।

तू मुझे देखता है, मेरे दिल का हाल जानता है, मेरी ज़रूरतों से वाक़िफ़ है, मेरे आज और मेरे आख़िरत से बेख़बर नहीं। मेरे नफ़ा-नुक़सान सब तेरे हाथ में हैं। अगर तू मुझे महरूम करे तो कौन देगा, और अगर तू मुझे छोड़ दे तो कौन मदद करेगा?

ऐ अल्लाह! मैं तेरे ग़ज़ब और नाराज़गी से तेरी पनाह चाहता हूँ। अगर मैं तेरी रहमत के क़ाबिल नहीं, तो तू अपनी वसीअ रहमत से मुझ पर करम करने के क़ाबिल ज़रूर है।

ऐ मेरे रब! तूने दुनिया में मेरे बहुत से गुनाह छुपाए, आख़िरत में भी उन्हें छुपा लेना। क़यामत के दिन मुझे रूस्वा न करना।

ऐ अल्लाह! तेरी करम-नवाज़ी ने मेरी उम्मीद बढ़ा दी है और तेरी मग़फ़िरत मेरे आमाल से कहीं बढ़कर है। मेरी तौबा क़ुबूल फ़रमा। मेरी उम्मीदें न तोड़, और मुझे अपनी रहमत से महरूम न कर।

ऐ अल्लाह! मुझे अपने दोस्तों में शामिल कर, अपने ज़िक्र से मेरे दिल को ज़िंदा कर, और मुझे उन लोगों में जगह दे जो तेरी रज़ा के घर में रहते हैं।

ऐ अल्लाह! मुहम्मद और उनकी आल (अ.) पर दरूद भेज, और मुझे उनकी पैरवी में क़यामत के दिन तुझसे मिलना नसीब फ़रमा, इस हाल में कि तू मुझसे राज़ी हो।"**

माहे शाबान के हर दिन दोपहर की दुआ

इमाम अली इब्न अल-हुसैन ज़ैनुल-आबिदीन (अ.) हर दिन दोपहर को और माहे शाबान की दरमियानी तारीख़ को यह दुआ पढ़ते थे:

"ऐ अल्लाह! मुहम्मद और उनकी आल (अ.) पर दरूद भेज— जो नुबूव्वत का दरख़्त हैं, रिसालत का मक़ाम हैं, इल्म के ख़ज़ाने हैं और वही का घर हैं। ऐ अल्लाह! मुहम्मद और उनकी आल (अ.) उस कश्ती की तरह हैं जो गहरे समुंदर में चलती है—जो उस पर सवार हुआ, वह बच गया, और जिसने उसे छोड़ा, वह डूब गया। यह वही महीना है जिसे तूने अपने नबी ﷺ की तरफ़ मंसूब किया— यानी माहे शाबान, जिसे तूने अपनी रहमत और रज़ा से ढाँप दिया।ऐ अल्लाह! हमें उनकी सुन्नत पर चलने की तौफ़ीक़ दे, उनकी शफ़ाअत नसीब फ़रमा, और क़यामत के दिन हमें उनसे मिला दे इस हाल में कि तू हमसे राज़ी हो।"

फ़स्ल 11: माहे शाबान के हर जुमेरात की फ़ज़ीलत और उस दिन की नमाज़

यह अमल माहे शाबान की पहली तारीख़ के आमाल में भी बयान हुआ है, क्योंकि कभी वह जुमेरात हो सकती है। अगर महीने की पहली तारीख़ जुमेरात न हो, तो एहतियातन और कोताही से बचने के लिए **पहले आने वाले जुमेरात** को यह अमल अदा किया जाए।

अमीर-उल-मोमिनीन अली इब्न अबी तालिब (अ.) से रिवायत है कि रसूल-ए-ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया:

"माहे शाबान के हर जुमेरात को आसमानों को सजाया जाता है और फ़रिश्ते कहते हैं: 'ऐ अल्लाह! इस दिन रोज़ा रखने वाले को बख़्श दे और उसकी दुआएँ क़ुबूल फ़रमा।' जो शख़्स इस दिन दो रकअत नमाज़ अदा करे, और हर रकअत में सूरह अल-फ़ातिहा एक बार, 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' सौ (100) बार पढ़े, और नमाज़ के बाद मुहम्मद ﷺ पर सौ (100) बार दरूद भेजे, तो अल्लाह उसकी दुनिया और आख़िरत की तमाम ज़रूरतें पूरी कर देता है। और जो इस दिन एक रोज़ा रखे, अल्लाह उसके जिस्म पर जहन्नम की आग हराम कर देता है।"

एक और रिवायत में रसूल ﷺ से है: **"जो शख़्स माहे शाबान की पच्चीसवीं (25) तारीख़ को रोज़ा रखे, अल्लाह उसकी दुनिया की बीस (20) और आख़िरत की बीस (20) ज़रूरतें पूरी करता है।"**

फ़स्ल 12: माहे शाबान की दूसरी रात के आमाल

रसूल-ए-ख़ुदा ﷺ से रिवायत है:

"जो शख़्स माहे शाबान की दूसरी रात पचास (50) रकअत नमाज़ अदा करे, और हर रकअत में सूरह अल-फ़ातिहा एक बार, 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' एक बार, और सूरह अन-नास व सूरह अल-फ़लक़ एक-एक बार पढ़े— तो अल्लाह किरामन कातिबीन को हुक्म देता है कि एक साल तक उसके गुनाह न लिखें। और उसे आसमानों और ज़मीन के आबिदों के सवाब में हिस्सा देता है। और उस ज़ात की क़सम जिसने मुझे नुबूव्वत दी, इस रात को कसरत से ज़िक्र के साथ जागने से सिर्फ़ बदबख़्त, मुनाफ़िक़ या फ़ासिक़ ही परहेज़ करेगा।"

फ़स्ल 13: माहे शाबान के दो दिन रोज़ा रखने की फ़ज़ीलत

रसूल-ए-ख़ुदा ﷺ से रिवायत है:
"जो शख़्स माहे शाबान में दो दिन रोज़ा रखे, उसके तमाम हलाक करने वाले गुनाह मिटा दिए जाते हैं।"

फ़स्ल 14: माहे शाबान की तीसरी रात के आमाल

रसूल-ए-ख़ुदा ﷺ से रिवायत है:
"जो शख़्स माहे शाबान की तीसरी रात दो रकअत नमाज़ अदा करे, और हर रकअत में सूरह अल-फ़ातिहा एक बार, और 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' पच्चीस (25) बार पढ़े— अल्लाह क़यामत के दिन उसके लिए जन्नत के आठ (8) दरवाज़े खोल देगा, जहन्नम के सात (7) दरवाज़े बंद कर देगा, और उसे हज़ार (1000) जोड़े और हज़ार (1000) ताज पहनाएगा।"

फ़स्ल 15: माहे शाबान के तीन दिन रोज़ा रखने की फ़ज़ीलत

रसूल-ए-ख़ुदा ﷺ से रिवायत है:
"जो शख़्स माहे शाबान के तीन दिन रोज़ा रखे, उसे जन्नत में मोतियों और याक़ूत के सत्तर (70) दर्जे अता किए जाएँगे।"

फ़स्ल 16: माहे शाबान का तीसरा दिन — इमाम हुसैन (अ.) की विलादत

इमाम हुसैन (अ.) की विलादत के बारे में मुख़्तलिफ़ रिवायतें हैं। यहाँ उस रिवायत पर अमल किया गया है जिसमें **तीसरी शाबान** को उनकी पैदाइश बयान हुई है। इसलिए इस दिन रोज़ा रखना और नीचे दी गई दुआ पढ़ना मुस्तहब है:

**"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे उस हस्ती के वासिते से सवाल करता हूँ जो आज के दिन पैदा हुए, जिनके लिए शहादत उनकी ज़िंदगी और पैदाइश से पहले मुक़र्रर कर दी गई थी; जिन पर आसमान और ज़मीन, और उनके रहने वाले रोए— वह मज़लूम शहीद, ख़ानदान-ए-नुबूव्वत के सरदार, क़यामत के दिन नुसरत पाने वाले, जिनकी शहादत के बदले उनकी औलाद को इमामत दी गई; जिनकी मिट्टी में शिफ़ा, और जिनकी वापसी में निजात है।

ऐ अल्लाह! हम पर इस दिन अपनी बेहतरीन नेमतें नाज़िल फ़रमा, हमारी तमाम दुआएँ क़ुबूल कर, और हमें मुहम्मद ﷺ और उनकी आल (अ.) के साथ क़यामत के दिन उठाना।"**

फ़िरिश्ता फ़ुतरुस की रिवायत

अब्दुल्लाह इब्न अब्बास से रिवायत है कि इमाम हुसैन (अ.) की विलादत के दिन अल्लाह ने जिब्रील (अ.) को रसूल ﷺ को मुबारकबाद देने भेजा। रास्ते में जिब्रील (अ.) उस टापू से गुज़रे जहाँ फ़िरिश्ता फ़ुतरुस अपने परों से महरूम थे। फ़ुतरुस ने इमाम हुसैन (अ.) के जिस्म-ए-मुबारक को छुआ, तो फ़ौरन उसके पर वापस आ गए और वह आसमान की तरफ़ उड़ गया।

इमाम हुसैन (अ.) की आख़िरी दुआ (कर्बला)

**"ऐ अल्लाह! तू मक़ाम में सबसे बुलंद, क़ुदरत में अज़ीम, मख़लूक़ से बेनियाज़, रहमत में क़रीब, वादा पूरा करने वाला, और तौबा क़ुबूल करने वाला है।

मैं तेरी बारगाह में फ़रियाद करता हूँ, क्योंकि मुझे तेरी ज़रूरत है। हमारे और हमारी क़ौम के बीच फ़ैसला फ़रमा, क्योंकि उन्होंने हमें धोखा दिया, मायूस किया, बेवफ़ाई की और क़त्ल किया।

हम तेरे नबी ﷺ की औलाद हैं। अपनी रहमत से हमारे लिए आसान राह पैदा फ़रमा। ऐ सबसे ज़्यादा मेहरबान, सबसे ज़्यादा रहम करने वाले!"**

इब्न अय्याश कहते हैं कि इमाम हुसैन (अ.) इस दिन यही दुआ पढ़ते थे और फ़रमाते थे कि **यह तीसरी शाबान (मेरी विलादत) की दुआ है।**